International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 47 : Indian Literature & Society
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

`छप्पर` उपन्यास में दलित चेतना

डॉ. जालिंदर इंगले
शोध निर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
म. स. गा. महाविद्यालय, मालेगांव कॅम्प
तह. मालेगांव, जिला नासिक

दलित साहित्य कई सवालों से लेकर लिखा जा रहा है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों पर आधारित साहित्य केवल दलितों का ही नहीं अपितु सवर्ण समाज के लिए भी शिक्षा का साधन बन सकता है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में दलित चेतना का स्वर उभरा है। दलित साहित्य समाज में समता, स्वतंत्रता और बंधुता के भाव पैदा करता है और समाज के तथाकथित उच्चवर्ग के शोषण से मानव मुक्ति का मार्ग बताता है। दलितोत्थान और दलित विकास के प्रति अपने अधिकारों की मांग करता है।

जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित उपन्यास `छप्पर` आंबेडकरवादी विचारधारा से ओतप्रोत है। सन् १९९४ में लिखा छप्पर उपन्यास हिंदी दलित साहित्य का प्रथम उपन्यास माना गया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने भारतीय संविधान की रचना कर एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए मार्ग बनाया किंतु मनुवादी वर्णव्यवस्था के मार्ग में बाधा निर्माण की। `छप्पर` में दलित समाज को इस मार्ग पर चलने का आहवान किया है। `छप्पर` उपन्यास के विषय में `दलित अस्मिता और हिंदी उपन्यास` मे डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी लिखते है, ``जयप्रकाश कर्दम के छप्पर उपन्यास के अनुभव संसार से बहस करते हुए ऐसा महसूस होता है कि हिंदी उपन्यास को भारत आझादी के बाद स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुता के संवैधानिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक संरचना के सृजनात्मक साहित्य की जमिन की तलाश है।``(१) प्रस्तुत उपन्यास आंबेडकरवादी विचाराधारा पर आधारित है। उपन्यास पढने से पता चलता है कि उपन्यास का नायक अंत तक संघर्ष करता रहता है। इसी विचारों के बारे में स्वयं जयप्रकाश कर्दम कहते है, ``अपनी लेखनी का प्रकाश अपने आंगन में ही न रोक लें। उसका तेज गाँव-गाँव के गहन अंधकार को दूर करने के लिए फैलाए। यह भूल न जाएँ कि अपने इस देश में उपेक्षितों, दलितों और दुखियों का अपना संसार है। उनके दुख, उनकी व्यथा समझे और अपनी सृजनशक्ति उनके जीवन को उन्नत करने के लिए होम दे यही सच्ची मानवता है।``(२) जाहिर है कि दलित साहित्य का निर्माण ही संघर्ष और आंदोलन से हुआ है। भारत छोटे-छोटे गाँवों में बटा है। गाँवों में अत्याचार, प्रताडना, शोषण, दलन आदि दलितों का सवर्ण द्वारा होता रहा है। चाहे पाणी का प्रश्न हो, मंदिर प्रवेश का हो, कहीं न कहीं दलितों को अन्याय से गुजरना पडता है।

`छप्पर` उपन्यास की कथावस्तु में स्वयं जयप्रकाश कदर्म लिखते है, ``गंगा तट पर बसा पश्चिमी उत्तर प्रदेश का छोटा सा गाँव है मातापुर। अन्य भारतीय गाँवों की तरह मातापुर में थोंडे से भेग सुखी संपन्न तिथा शेष लोग दीन और दरिद्र हैं। दूसरे गाँवों की तरह सवर्ण लोग उपर की ओर तथा अवर्ण कहे जानेवाले दलित लोग गंगा के बहाव की ओर निचान में बसे हैं। निचान की ओर गाँव के इस छोर का आखिरी घर है सुक्खा का।``(३) जयप्रकाश कर्दम जी ने भारतीय ग्राम व्यवस्था की जडों को छूवा है। जहाँ सवर्णों और दलितों के बीच की सामाजिक विषमता को देखा है। वर्ण व्यवस्था और जातिव्यवस्था के राक्षसों ने दलितों को चैन से सोने नहीं दिया। सुक्खा के परिवार को आधार बनाकर ग्रामीण समाज की

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 47 : Indian Literature & Society
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

खोकली रीति-नीति को उखाडा गया है। सुक्खा अपनी पत्नी के के साथ घास-फुस के छप्पर में रहता है। दोनो पति-पत्नी अपने अकेले बेटे चंदन को पढाने के लि दिन-रात मेहनत मजदुरी करते है। सुक्खा को लगता है कि मेरा जीवन सेठ साहुकारों की गुलामी करते हुए बिता है वैसा मेरे बेटे के जीवन में नहीं आना चाहिए। हम जो दुःख सह रहे है वह मेरा बेटा न सहे। वह पढलिख कर कुछ न कुछ बन जाए। इसलिए वह कहता है, ``हमें थोडे दुःख उठाने पड रहे हैं तो क्या दुःख के बाद सुख आता है। हमारे दिन भी बहारेंगे कभी न कभी।''(४) सुक्खा और रमिया को अपने पुत्र चंदन के जीवन के बारे में तरह-तरह के सवाल मन में उठते है। अपना जीवन चाहे कैसा भी हो जाए किंतु चंदन को पढाकर उचें ओहदे तक पहुँचाने की उनकी लालसा है। दलित दम्पति की आंबेडकर वादी ईच्छा को कर्दम जी ने बखुबी ढंग से वर्णित किया है कि, ``मेरे जीते जी मेरे इकलौते बेटे को अपनी पढाई-लिखाई छोडकर मेरी तरह शोषण और बर्बरता की चक्की में पिसना पडेगा? क्या उसे भी गुजर-बसर के लिए लाला-साहुकारों के तलुए सहलाने पडेंगे? क्या उसे भी नमक और प्याज के साथ रूखी-सुखी रोटी अपने गले के नीचे उतारनी पडेंगी? क्या उसे भी मेरी तरह पशुवत जीवन जीना पडेगा?''(५) जयप्रकाश कर्दम ने चंदन के जरिए पूरे भारतीय दलित समाज का चित्र सामने रखा है। आज भी कई दलित युवकों की जिंदगी तहस-नहस हो रही है। उसका प्रमुख कारण है आर्थिक और सामाजिक विषमता। भारत के प्रत्येक गाँव की स्थिति 'छप्पर' के पात्र सुक्खा, रमिया और चंदन जैसी ही है। दलित के पीछे जाति की पूछ कायम है, चाहे वह गाँव हो या शहर। चंदन गाँव और शहर की स्थिती में कोई बदलाव नहीं देखता। जयप्रकाश कर्दम बताते है कि, ``चंदन जब पढाई के लिए गाँव से शहर आया कि उसके मन में एक कल्पना थी शहर को लेकर। वह सोचता था कि शहर का वातावरण गाँव से अच्छा होगा। न वहाँ पर आर्थिक तंगी होगी, न पुलिस और कानून का आतंक, न ठाकुर और जमिंनदारों का आतंक, न उनका आतंक का मनमाना राज। शहर में न छुवा-छूत होगी, चोरी डकैती का डर। शहर आने पर उसे पता चला कि शहर में भी केवल थोडे से ही लोग सुखी और सम्पन्न है, शेष लोग अभावों में अपना जीवन जी रहे है। शहर में भी बहुत से दलित और दरिद्री लोग बिना छुकी - भुनी सब्जी खाते हैं, या केवल पानी या चाय के साथ नमक डालकर रोटियाँ गले के नीचे उतारते हैं। कुछ लोक फुटपाथ पर ही रात गुजारते हैं। कई गर्भवती स्त्रीयाँ फुटपाथ पर ही खुले आकाश के नीचे अपने बच्चें को जन्म देती है। यह एक जीवन की त्रासदी है, उनके जीवन की जिसे नियति का आदेश मान बैठे ये लोग।''(६) दलित समाज की सबसे बडी कमजोरी आर्थिक स्थिती और शिक्षा का अभाव। इसलिए उन्हें हर-तरह से लुटा गया। आर्थिक स्थिति ने उन्हें गुलामी में जीने के लिए मजबूर कर दिया।

'छप्पर' उपन्यास आंबेडकरवादी विचारधारा की नींव पर खडा है। उनका उद्देश्य शिक्षित समतामूलक समाज है। चंदन का पात्र इन विचारों से ओत-प्रोत है। उसको समाज की खूब चिंता है। वह समाज को शोषण की जंजीरों से छूटकारा पाने के लिए प्रयत्नरत है। इसलिए चंदन कहता है, ``हमें समाज से टक्कर लेनी है, सत्ता से लडाई लडनी है, जुल्म और शोषण के विरूध्द संघर्ष करना है। यह सीर्फ एक-दो आदमी के बस का काम नहीं है यह।''(७) 'उपन्यास' में धर्म को शोषण और अत्याचार की जड माना गया। धर्म ही असमानता का मूल है इसिलिए समाज में उँच-नीच और जातिवाद का फैलाव हो रहा है। वह कहता है कि उन जडों को उखाड कर फेकना है।

उपन्यास के अंत में चंदन की ओर ठाकुर हरमानसिंह की बेटी रजनी को आकर्षित होते दिखाया है। वह अपने पिता का विरोध कर दलितों के प्रति अमानवीय व्यवहार में बदलाव लाती है। रजनी चंदन

Scanned with CamScanner

के साथ रहकर समाज सुधार में उसकी मदत करती है। रजनी और चंदन का विवाह हो जाता है और ठाकुर अपनी सारी जमीन मजदूरों में बाँट देता है। जयप्रकाश कर्दम जी ने उपन्यास का प्रारंभ उपदेशात्मक बताया है फिर संघर्षशील लेकिन अंत में रजनी और चंदन के संबंधों को जोडकर उपन्यास को सुखांत तो बनाया है लेकिन दलित समाज के सामाजिक स्थान वहाँ का वहाँ रह गया है। उपन्यास का वैचारिक पक्ष बहुत सशक्त है। दलित समाज की स्वानुभूति के कारण उपन्यास ने नयी दिशा और प्रगतिशील समाज की दिशा आवश्य मिलती है। उसमें दलित समाज को शिक्षित बनाकर संगठन में रहने का संदेश है जो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों का पक्षधर है।

संदर्भ :-

१. दलित अस्मिता और हिंदी उपन्यास- डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी - पृष्ठ क्र.२८
२. सारिका-समानंतर कहानी विशेषांक - स. कमलेश्वर - अप्रेल १९७५, पृष्ठ क्र. ११
३. छप्पर (उपन्यास) जयप्रकाश कर्दम - फ्लैप से।
४. छप्पर - जयप्रकाश कर्दम - पृष्ठ क्र. १२
५. छप्पर - जयप्रकाश कर्दम - पृष्ठ क्र. ३२
६. छप्पर - जयप्रकाश कर्दम - पृष्ठ क्र. ३८
७. छप्पर - जयप्रकाश कर्दम - पृष्ठ क्र. ४३
८. छप्पर - जयप्रकाश कर्दम - पृष्ठ क्र. ४४

Scanned with CamScanner